फ़िलिस्तीन में तुर्कियों के साथ

अलेक्ज़ेंडर आरोंशों

अनुवाद

बिभाष कुमार श्रीवास्तव

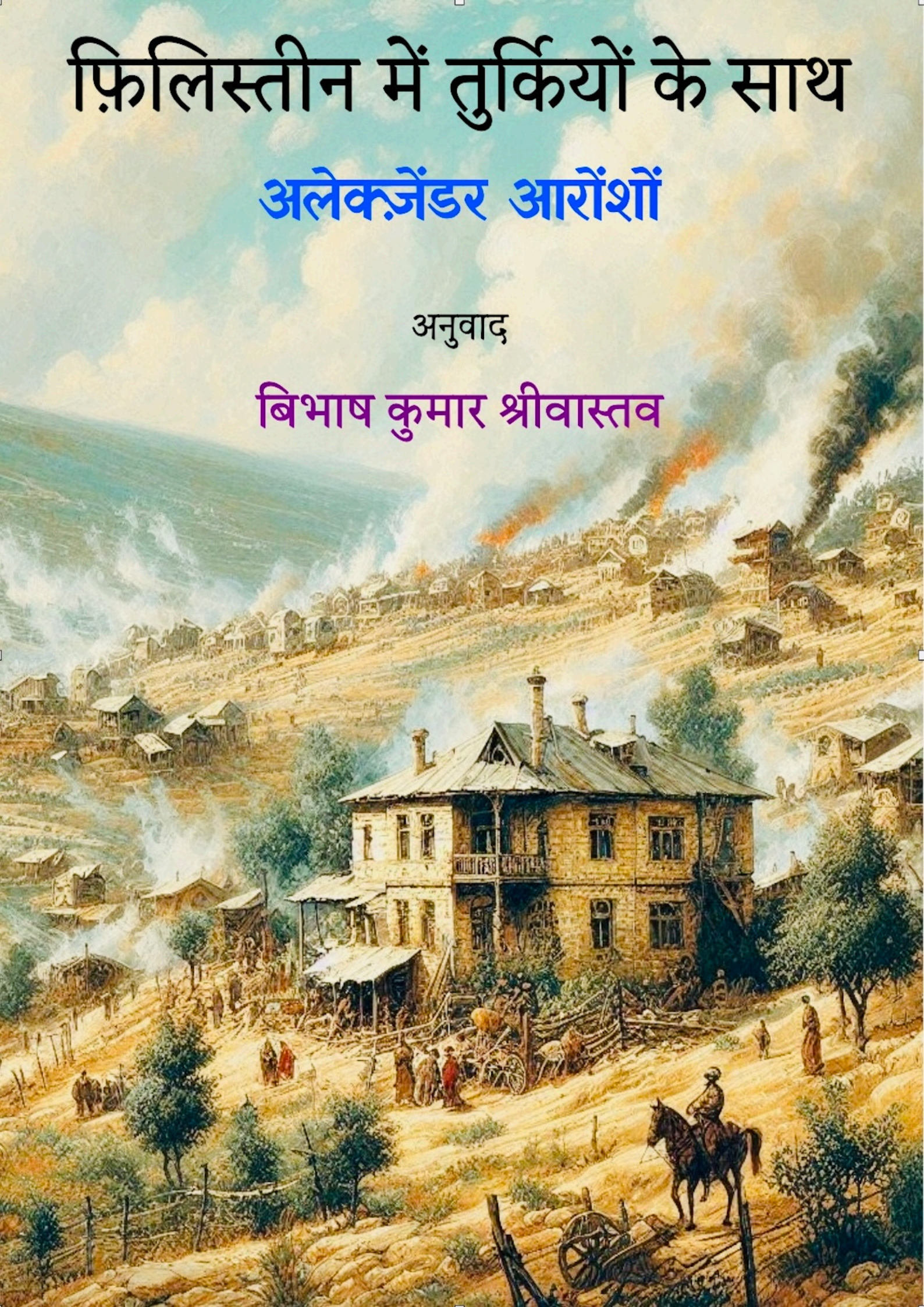

फ़िलिस्तीन में तुर्कियों के साथ

अलेक्ज़ेंडर आरोंशों

अनुवाद

बिभाष कुमार श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2024

© बिभाष कुमार श्रीवास्तव

फ़िलिस्तीन में तुर्कियों के साथ

एलेक्ज़ॅन्डर एरोनसन का रोज़नामचा

यह पुस्तक एक साधारण सा रोज़नामचा है जब यहूदी फ़िलिस्तीन में आकर बसना शुरू किए। ज़िक्रॉन-जैकब वह पहला गाँव है जिसे यहूदियों ने पहले पहल आबाद किया। बीसवीं शताब्दी के पहले दशक के अंत से यह सिलसिला शुरू हुआ। फ़िलिस्तीन-ए लैंड ऑफ़ प्रॉमिज़ नेवर टू बि अटेन्ड-A land of Promise never to be attained। ईश्वर का यह वादा किस मुकाम पर पहुँचा यह सब देख सकते हैं। लेकिन तब तुर्की और जर्मनी की मिली-जुली सत्ता ने फ़िलिस्तीन में कितनी बदहाली फैलाई, अलेक्ज़ेंडर एरोनसन के इस रोज़नामचे ने बख़ूबी दर्ज किया है और मित्र राष्ट्र, जिन पर यहाँ के लोग आशा से नज़र गड़ाए थे उसने लोगों को कितनी आशाएँ बाँटीं। ज़्यादा न लिखते हुए मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि इस रोज़नामचे में कई मिथकीय और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है बिना विस्तार दिए। अनुवाद करते समय मेरा यह प्रयास रहा है कि इन मिथकीय और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर यथास्थान शामिल किया जाए जिससे रोज़नामचे में कही बात को समझने में आसानी हो। अनुवाद की भाषा भी हूबहू वही नहीं रखी गई जैसा कि लेखक ने लिख रखा है। भाषा को हिंदी के प्रचलित मुहावरे के अनुसार रखा गया है जिससे कि पाठकों को लेखक की कही बात समझने में सुविधा हो।

आशा है मेरा यह प्रयास आप को पसंद आएगा।

बिभाष कुमार श्रीवास्तव

लखनऊ

9 अप्रैल, 2024

अनुक्रम

भूमिका	5
ज़िक्रॉन-जैकब	7
जबरन सैन्य सेवा	13
जर्मन प्रोपेगंडा	24
सड़क निर्माण और सैन्य सेवा से मुक्ति	30
छिपाए गए हथियार	36
स्वेज़ अभियान	43
टिड्डियों से मुक़ाबला	55
लेबनान	58
फ़िलिस्तीन का लुटेरा रईस	66
अविवेकपूर्ण दुस्साहस	73
बच निकलने की कहानी	80

भूमिका

जबकि बेल्जियम लहूलुहान है और उम्मीद पर बैठा है, जबकि पोलैंड पीड़ित है और मुक्ति के सपने देख रहा है, जबकि सर्बिया मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहा है, एक छोटा सा देश है जिसकी आत्मा टुकड़े-टुकड़े हो पड़ी हुई है - एक छोटा सा देश जो इतना दूर है, इतना दुर्गम कि उसकी उत्कट आहों को सुना नहीं जा सकता।

यह शाश्वत बलिदान का देश है, वह देश जिसने इब्राहीम को वह वेदी बनाते देखा जिस पर वह अपने इकलौते बेटे को बलि चढ़ाने के लिए तैयार था, वह देश जिसे मूसा ने दूर से देखा, सुंदर और मनोरम, - वह भूमि जिसका ईश्वर ने वादा किया था उन्हें कभी न मिल सकी (मूल पुस्तक में लिखा है 'a land of promise never to be attained')। भौगोलिक रूप से बाइबिल में उल्लिखित वह भूमि मानी जाती है जोकि लेबनान की पहाड़ियों के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में, मिस्र के उत्तर और पूर्व में, भूमध्य सागर के तट के मैदानों के पूर्व में और अरब के रेगिस्तान के पश्चिम में स्थित है। बाइबिल के अनुसार यह वह भूमि है जिसे इब्राहीम और उनके वंशजों को देने का वादा ईश्वर ने किया था), - वह देश जिसने दुनिया को आत्मा और प्राण के प्रतीक दिए। फ़िलिस्तीन!

कोई भी युद्ध संवाददाता, कोई रेड क्रॉस या राहत समिति फ़िलिस्तीन नहीं गई है, क्योंकि वहाँ कोई वास्तविक लड़ाई नहीं लड़ी जा रही है, और फिर भी सैकड़ों हज़ार लोग वहाँ सबसे बुरी पीड़ा, आत्मा की पीड़ा झेल रहे हैं।

जिन लोगों ने दुनिया को यह दिखाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है कि फ़िलिस्तीन को फिर से दूध और शहद की नदियों वाला देश बनाया जा सकता है, जिन्होंने पैग़म्बरों और महान शिक्षकों की भावना को पुनर्जीवित करने का सपना देखा है, उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया और सताया गया और निर्वासित कर दिया गया, उनके सपने चकनाचूर हो गए, उनके पवित्र स्थान अपवित्र किए गए, उनका काम तहस-नहस कर दिए गए। दुनिया से कटे हुए, भूखे शरीर को सहारा देने के लिए रोटी के अभाव से ग्रस्त, एक बर्बर फ़ैजीशाह के भारी जूते उनकी आत्मा को रौंद रहे हैं, फ़िलिस्तीन के सपने देखने वालों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया है, और बंदूकों और तलवारों के टकराव के बीच वे आत्मा के लिए लड़ रहे हैं, आत्मा के हथियार से।

अभी तक इन लड़ाइयों का रिकॉर्ड लिखने का समय नहीं आया है, न ही फ़िलिस्तीन के उत्कृष्ट नायकों को न्याय देने का प्रयास करने का। यह किताब महज़ एक ऐसे व्यक्ति के कुछ व्यक्तिगत अनुभवों की कहानी है जिसने अपने हजारों साथियों की तुलना में कम काम किया है और कम कष्ट झेले हैं।